# 9वें विश्व हिन्दी सम्मेलन में डॉ. जयन्ती प्रसाद नौटियाल द्वारा शोध पत्र की प्रस्तुति

**(शोध पत्र 2012 की लिए देखें www.drjpnautiyal.com)**

पूर्व सांसद-
**बालकवि बैरागी**
(लोकसभा-1984 -1989)
(राज्यसभा-1998 -2004)

सत्यमेव जयते

मोबा. : 9425106136
**'धापूधाम'** 169-डॉ.पुखराज वर्मा मार्ग
पोस्ट-**नीमच** (मध्यप्रदेश) पिन -458 441
फोन : 07423 - 221819 / 227911

21/1/2013

आदरणीय नौटियाल जी,

सादर वंदे .....

वर्ष 2013 आप सभी को शुभ हो। मेरी हार्दिक बधाई स्वीकार करें। आशा है आप सपरिवार सानंद सकुशल होंगे। इधर सब कृपा है ऊपर वाले की। आपका 2013 का पत्र आज मिला। धन्यवाद। आपने जोहान्सबर्ग की खूब याद दिलाई। मैंने उस दिन आपको ध्यान से सुना था। इतना ही नहीं आपके इस शोध पत्र की छाया प्रति मैंने दिल्ली में सचिवालय से प्राप्त की। पिछले महीने से जहाँ–जहाँ भी मुझे हिन्दी के संदर्भ में बोलना पड़ा वहाँ–वहाँ मैं ने आपकी शोध और उसकी प्रामाणिकता की सगर्व चर्चा करके आपका उल्लेख किया है। आगे भी मैं यही कहूँगा। आपका काम बहुत महत्वपूर्ण है। मुझे इससे संबल मिलता है। आपका आभार हमें मानना चाहिए। आपकी शोध को चर्चा में बनाए रखना जरूरी है। अस्तु,

सभी को मेरा ससम्मान स्मरण। यदा कदा पूछताछ कर लिया करें। और सब ठीक ही है।

सादर,

(बालकवि बैरागी)

विदेश मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा दिनांक 22 सितंबर से 24 सितंबर 2012 तक दक्षिण अफ्रीका के जोहन्सबर्ग नामक शहर में आयोजित 9वें विश्व सम्मेलन में सहायक महा प्रबंधक डॉ. जयन्ती प्रसाद नौटियाल के बहु चर्चित शोध आलेख **'मंदारिन नहीं हिन्दी है पहले स्थान पर'** को विश्व हिन्दी सम्मेलन में प्रस्तुति हेतु चुना गया।

डॉ. जयन्ती प्रसाद नौटियाल ने दिनांक 23.09.2012 को ज्ञान कक्ष में हिन्दी के प्रख्यात कवि बालकवि बैरागी की अध्यक्षता में उक्त शोध पत्र प्रस्तुत किया।

डॉ. जयन्ती प्रसाद नौटियाल 1981 से इस शोध में लगे हैं। तीन दशक के इस शोध में डॉ. जयन्ती प्रसाद नौटियाल ने यह सिद्ध किया है कि विश्व में हिन्दी जाननेवाले सबसे अधिक हैं। इसलिए विश्व में हिन्दी का स्थान प्रथम है। चीनी भाषा जानने वाले दूसरे स्थान पर हैं। उनकी शोध के अनुसार भारत सहित विश्व के अन्य देशों में हिन्दी जाननेवालों की संख्या जोड़ने पर हिन्दी जानने वालों की संख्या 1200 मिलियन है जब कि चीन सहित विश्व के अन्य देशों में चीनी जानने वालों की सख्या 1050 मिलियन तक ही पहुँचती है।

डॉ. जयन्ती प्रसाद नौटियाल यह शोध भारत के 150 से भी अधिक समाचार पत्रों एवं पत्रिकाओं में प्रकाशित हुआ है। इन्टरनेट के माध्यम से अंग्रेजी व हिन्दी में यह शोध विश्व के कई देशों में ई–पत्रिकाओं के माध्यम से प्रकाशित हुआ है।

इस शोध को अनेक माननीय सांसदों व लेखकों, भाषाविदों एवं बुद्धिजीवियों ने सराहा है। इस शोध को भारत के तथा विश्व के अनेक प्रकाशनों में उद्धृत किया जाता है।

इस शोध पर श्री बैरागी जी ने अपने पत्राँक 21.01.2013 द्वारा यह विचार व्यक्त किए।